



सब्जी उत्पादन से कृषि विविधीकरण

नरेन्द्र सिंह*, आदित्य कुमार सिंह** और एच.एस. कुशवाहा***

❖ बुन्देलखंड में कृषि जलवायु व फसल उत्पादन एक-दूसरे पर पूर्णतः निर्भर रहते हैं। यदि जलवायु साथ देती है, तो उत्पादन होगा अन्यथा बिल्कुल नहीं। इसके पीछे असिंचित परिस्थितियां, भारी मृदा, 03-48 डिग्री सेल्सियस तक तापमान आदि कारण हैं अधिकांश फसलों को प्रभावित कर देते हैं। सामाजिक परिस्थितियां भी कृषि के अनुकूल नहीं रहती हैं। उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए बुन्देलखंड, जिसमें चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर, ललितपुर, झांसी एवं जालौन जनपद आते हैं, वहां बागवानी व सब्जी उत्पादन के माध्यम से कृषि विविधीकरण को प्रोत्साहित किया जाए, तो आर्थिक सशक्तिकरण सम्भव हो सकता है। ❖

जनपद चित्रकूट में वर्तमान परिस्थितियों में लगभग 5 प्रतिशत क्षेत्रफल में ही बागवानी व सब्जी उत्पादन का कार्य किया जा रहा है, जो नगण्य है। कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्रकूट में हुए प्रयोगों के आधार पर बागवानी के लिए आंवला, अमरूद, बेर व बेल उपयुक्त हैं। इसी प्रकार व्यावसायिक सब्जी उत्पादन

के लिए मटर, टमाटर, मिर्च, खरीफ प्याज, बैंगन तथा मसाला फसलों में हल्दी, धनिया व मेथी की खेती अत्यन्त लाभदायक पायी गई है। फल वृक्षों के साथ अंतःफसल के रूप में नये स्थापित बागों में धनिया, मेथी व हल्दी के परिणाम सर्वोत्तम पाये गये हैं। इसी प्रकार पुराने बागों में हल्दी व सूरन की खेती लाभदायक पाई गई। विभिन्न माध्यमों से कृषक जागरूक होकर इन पद्धतियों को अपना रहे हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र ने अपने प्रक्षेत्र पर व किसानों के खेतों पर भी अनेक इकाइयां स्थापित की हैं।

जनपद में अधिकांश कृषक लघु जोत

वाले हैं, जिनके पास 1.5 से 2.0 एकड़ जमीन है। वहां पर एकीकृत फसल प्रबंधन मॉडल के माध्यम से कृषक अन्य फसल आधारित पद्धतियों की तुलना में 2-3 गुना अधिक आय प्राप्त कर रहे हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र ने उत्पादन के क्षेत्र में कुछ ऐसे बिन्दु भी चिन्हित किये हैं, जिनपर विशेष ध्यान दिया जाये, तो बागवानी एवं सब्जी उत्पादन एक कृषि उद्योग के रूप में जनपद व बुन्देलखंड में स्थापित हो सकता है, जिनमें प्रमुख रूप से शामिल हैं:

भंडारण व्यवस्था

बागवानी व सब्जी उत्पादों की भंडारण

*प्रोफेसर, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (उत्तर प्रदेश); **वैज्ञानिक/तकनीकी अधिकारी, क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, भरारी, झांसी (उत्तर प्रदेश); ***प्रोफेसर, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (मध्य प्रदेश)

आर्थिक विश्लेषण

कृषि विज्ञान केन्द्र ने अपने प्रक्षेत्र व कृषकों के खेतों पर बागवानी के अंतर्गत आंवला तथा अमरूद और सब्जी में टमाटर, बैंगन व मिर्च के अनेक प्रयोग किये हैं। इनके अध्ययन के बाद निम्न आर्थिक निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं:

- आंवले की बागवानी से प्रति एकड़ 30-32 हजार रुपये की आमदनी होती है, जो फसलों की तुलना में दोगुनी है।
- यदि आंवले के साथ धनिया व मिर्च की खेती की जाये, तो प्रति एकड़ 8-10 हजार रुपये अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।
- यदि टमाटर की खेती की जाती है, तो प्रति एकड़ 30-35 हजार रुपये की आय प्राप्त कर सकते हैं।
- मिर्च की खेती से 35-40 हजार रुपये प्रति एकड़ आय प्राप्त हो सकती है।
- यदि टमाटर और मिर्च के साथ गेंदे की फसल पंक्तियों में बोई जाती है, तो निमेटोड के नियंत्रण के साथ-साथ 5-8 हजार रुपये की अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

व्यवस्था न होने के कारण कृषकों को अपना माल तुरन्त बेचना पड़ता है, जिसका लाभ व्यापारी व बिचौलिए उठाते हैं। इसके साथ



आंवला उद्यान

ही जनपद के पूंजीपति इस क्षेत्र में धन नहीं लगाना चाहते हैं और कृषक स्वयं सक्षम नहीं हैं। यदि बुन्देलखंड में शीतगृह व भंडारण क्षमता विकसित कर दी जाये, तो कृषकों को उत्पाद का अच्छा मूल्य प्राप्त हो सकेगा।

बाजार व्यवस्था

वर्तमान असंगठित बाजार व्यवस्था भी सब्जी व फल उत्पादन को हतोत्साहित करती है। इसमें भी सुधार की आवश्यकता है, जिससे किसानों का प्रतिनिधित्व बढ़ेगा व उत्पादन का उचित मूल्य मिल सकेगा।

प्रसंस्करण व्यवस्था

जनपद चित्रकूट के साथ पूरे बुन्देलखंड

में फल एवं सब्जी के बड़े स्तर पर प्रसंस्करण उद्योग स्थापित न होने के कारण उत्पाद की बिक्री सुनिश्चित नहीं रहती और कृषकों को स्थानीय बाजार पर ही निर्भर रहना पड़ता है, जिसके कारण हानि उठानी पड़ती है। अतः यदि इस क्षेत्र में पूंजी निवेश हो, तो कृषक अधिक क्षेत्रफल में सब्जी उत्पादन का कार्य कर सकते हैं।

भारत सरकार व प्रदेश सरकार ने अनेक योजनाएं बुन्देलखंड के कृषकों के उत्थान के लिए प्रारम्भ की हैं, जिन पर सही ढंग से क्रियान्वयन किया जाये, तो अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकेंगे। इसमें सिंचाई की व्यवस्था, मृदा स्वास्थ्य, जैविक खेती को प्रोत्साहन, बाग स्थापना, सब्जी की खेती को प्रोत्साहन आदि शामिल हैं।

सम्भावनाएं

गहन स्तर पर सभी परिस्थितियां चाहे जलवायु जन्य हों, आर्थिक हों या सामाजिक, उनके विश्लेषण के बाद निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बुन्देलखंड में बागवानी व सब्जी उत्पादन से आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण लाया जा सकता है। इसमें एक तरफ उपलब्ध सिंचाई जल का सर्वोत्तम प्रयोग होगा और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन रुकेगा। इसके साथ ही ग्रामीण युवा वर्ग को खेती के प्रति आकर्षित किया जा सकता है, जिससे उनका शहरों की तरफ पलायन भी रुकेगा।



टमाटर